13 Jan. 2022

321

ग्रामीण बाजार केन्द्र

Rural Service Centre

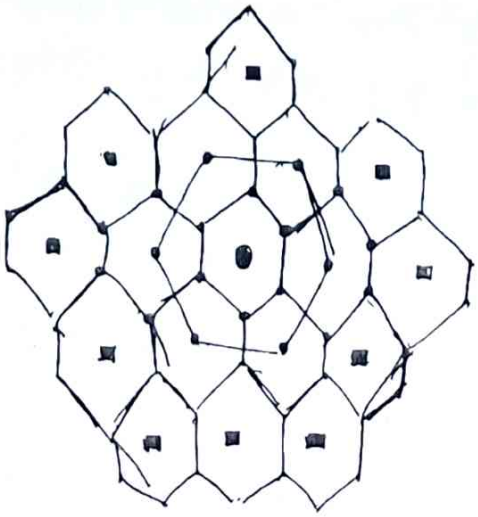

fig :— location of rural market sector

ग्रामीण बाजार केन्द्र व्यापार केन्द्रों के पदानुक्रम में सबसे नीचले स्तर पर आते हैं। बड़े बाजार केन्द्र एक से अधिक गाँवों की सेवाएँ प्रदान करते हैं और कभी-2 अपनी ग्रामीण बस्ती तक ही सेवाएँ प्रदान करते हैं।

जब यह एक से अधिक गाँवों की सेवाएँ प्रदान करते हैं तो यह बाजार केन्द्र भविष्य में विकसित होकर प्रखंड मुख्यालय में तब्दील हो जाते हैं।

ग्रामीण बाजार केन्द्र की विशेषता —

1. ग्रामीण बाजार केन्द्र, जिला प्रखंड मुख्यालय एवं जिला मुख्यालय से सूचारू रूप से जुड़ी होती हैं। राष्ट्रीय राजमार्ग के सहारे अवस्थित ग्रामीण बाजार केन्द्र काफि तेजी से विकसित होकर प्रखंड मुख्यालय में तब्दील हो जाते हैं।

Ex:— कोचस (रोहतास)

Scanned with CamScanner

2. ग्रामीण बाजार केन्द्र ग्रामीण सड़कों द्वारा अपने catchment एरिया से 12-मासी सड़कों से जुड़े होते हैं।

3. ग्रामीण बाजार केन्द्र ग्रामीण उत्पाद एवं शहरी उत्पाद दोनों के विक्रय केन्द्र होते हैं।

4. यहाँ बस अड्डा, पिपणन केन्द्र, बीज वितरण केन्द्र तथा साप्ताहिक बाजार केन्द्र होता है। पश्चिम बंगाल में साप्ताहिक बाजार केन्द्रों को हाट, पेंठिया अथवा शाण्डी कहते हैं।
बिहार में हाट (जैसे- मुसल्हपुरहाट), हटिया (सभी प्रखंड मुख्यालयों में), साप्ताहिकी पूर्वांचल क्षेत्रों में कहा जाता है।

5. बिहार में ग्रामीण बाजार स्थायी एवं अस्थायी प्रकार के होते हैं। स्थायी बाजार को बाजार समिति तथा अस्थायी बाजार मेला/कार्यशाला होता है।

ग्रामीण बाजार केन्द्र के प्रकार —

1. जिला बाजार समिति
2. सरकारी/गैर सरकारी स्तरीय कार्यशाला
3. सार्वजनिक मेला/त्योहार
4.

1. जिला बाजार समिति —

जिला बाजार समिति की भूमिका ग्रामीण बाजार केन्द्रों में सबसे प्रमुख होती है। यह एक ऐसा केन्द्र जहाँ ग्रामीण उत्पादों

Scanned with

का सही मूल्य की प्राप्ति होता है तो साथ-2 ही खरीदारों को भी उचित मूल्य की प्राप्ति होती है।

यहाँ सरकार का विपणन केन्द्र भी होता है जो सरकार द्वारा निर्धारित मूल्यों पर कृषि उत्पाद की खरीद करता है।

- सप्ताहिकी बाजार की भूमिका भी लगभग ऐसी ही होती है। बिहार की प्रत्येक जिले में बाजार समिति की स्थापना हुई है जहाँ फल, सब्जी, मछली एवं अन्य कृषि उत्पाद का क्रय-विक्रय होता है।

२. सरकारी एवं गैर-सरकारी ~~बाजार~~ स्तरीय कार्यशाला

- सरकारी एवं गैर-सरकारी स्तर से लगने वाला कार्यशाला, सेमिनार, प्रशिक्षण केन्द्र एवं वितरण केन्द्र की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है। ये सब भी ग्रामीण सेवा केन्द्र के रूप में विकसित होते हैं।

- प्रखण्ड कौशल विकास योजना भी ग्रामीण सेवा केन्द्र को विस्तारित करता है।

- सरकारी / गैर सरकारी स्तरीय कार्यशाला में सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जाता है।

- गैर-सरकारी संगठन भी समय-2 पर ग्रामीण एवं प्रखंड स्तर पर स्वास्थ्य सुरक्षा एवं राहत से संबंधित कार्यशाला आयोजित करती है। यह लोगों के संग्रह स्थल का कार्य करता है जहाँ सूचनाओं के साथ-2 ग्रामीण बाजार वस्तुओं का भी विनिमय हो जाता है।

Scanned with CamScanner

24

3. सार्वजनिक मेला / त्योहार

- इसकी भूमिका भी ग्रामीण बाजार केन्द्र के रूप में अतिमहत्वपूर्ण है। सोनपुर का हरिहर पशु मेला एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला है जहाँ पशुओं के साथ-साथ कृषि यंत्रों का क्रय-विक्रय होता है।
- इसी तरह मधुबनी का सौराठ मेला विवाह से संबंधित है (विवाह से संबंधित वस्तुओं का क्रय-विक्रय)।
- अरवल का देवकुण्ड मेला मौसमी मेला है।
- औरंगाबाद का देवसूर्यमंदिर मेला धार्मिक मेला है।
- इसी तरह राजगिर का मलमास मेला गया का पितृपक्ष मेला, धारन जनजाति का शिवरात्रि मेला धार्मिक मेला है। परन्तु यहाँ भी ग्रामीण आवश्यकता की पूर्ति योग्य वस्तुओं का क्रय-विक्रय किया जाता है।

उपर्युक्त विवेचनों के आधार पर कहा जा सकता है कि ग्रामीण बाजार केन्द्रों की भूमिका ग्रामीण क्षेत्रों में काफि महत्वपूर्ण होती है। यहाँ ग्रामीण उत्पादों व शहरी उत्पादों का क्रय-विक्रय होता है, सूचनाओं का भी आदान-प्रदान होता है।

यह एक ऐसा मिलन-स्थल है जहाँ ग्रामीण संस्कृतियों की प्रचुरता होती है परन्तु शहरी संस्कृति भी कुछ हद तक देखने को मिलती है।